दलित कहानीकारों की कहानियों में दलित जनजीवन के जीवन्त स्वर

डॉ0 बुशरा रिजवान जाफरी,

प्रवक्ता–हिन्दी विभाग

चन्द्रशेखर आजाद डिग्री कालेज,लखीमपुर–खीरी,उ.प्र.

असीम रचनात्मक सम्भावनाओं वाले दलित कहानीकारों की ज्वलंत मुद्दे पर लिखी कहानियाँ समाज के दमित, शोषित, पीड़ित व्यक्तियों के दुःखों की यथार्थ दासतान के रुप में परिलक्षित होती हैं। आकार की दृष्टि से ये कहानियां तीन प्रकार की हैं–लम्बी कहानी, मध्यम कहानी तथा लघु कहानी। लम्बी कहानियों में मोहनदास नैमिशराय की 'कर्ज; गर्वनर के कोट का बटन' आदि सम्मिलित की जा सकती हैं। मध्यम कहानियों में ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'बैल की खाल; 'गोहत्या; 'ग्रहण' आदि तथा लघु कहानियों में नैमिशराय की मुक्ति का संघर्ष' व 'एक गुमनाम मौत' आदि कहानियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं।

ये कहानियाँ दलितों के भोगे हुए यथार्थ को चित्रित तो करती ही हैं, साथ ही साथ दलितों के साथ हुए भेदभाव और अत्याचार को समाप्त कर समानता की भावना स्थापित करते हुए मुक्ति की कामना को समक्ष रखती हैं। घुसपैठिए, सलाम (ओम प्रकाश वाल्मीकि), हमारा जवाब(मोहन दास नैमिशराय), हाशिए से बाहर (रजत रानी मीनू), हैरी कब आएगा (सूरजपाल चौहान) आदि कहानी संग्रहों में संग्रहीत कहानियां इक्कीसवीं शताब्दी की देहली पर दस्तक देते भारत में सवर्ण व निम्न जीवन स्तर जीने को बाध्य अवर्ण समाज के शोषक–शोषित, शासक–शासित रूपों की तस्वीर अपने आप में समाहित किए हुए हैं। ''इन कहानियों के केन्द्र में है दलित समाज, और वह अपने सुख–दुःखों, यंत्रणाओं और यातनाओं में तपकर अपनी स्वतंत्र पहचान माँग रहा है। ये वे अनुभव खण्ड हैं, जो रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्चाई पर आधारित भोगे हुए यथार्थ हैं, जो समाज की इस नग्न सच्चाई का पर्दाफाश करते हुए इस पर प्रश्नचिन्ह भी छोड़ते हैं।

कलात्मकता की शर्ते इन दलित कहानीकारों के लिए मान्य नहीं हैं, क्योंकि इनका अपना अलग सौन्दर्यशास्त्र है। इन कहानीकारों ने अपने आस–पास की भाषा का वैसा ही प्रयोग इन कहानियों में किया है, जैसा उनके परिवेश का यथार्थ रूप है। इन कहानीकारों ने अपने आस–पास प्रचलित भाषा का वैसा ही प्रयोग कर कहानी को यथार्थ रूप तो प्रदान किया ही है, साथ ही दलित समाज व जनजीवन को समझने में भी यह सहायक सिद्ध हुआ है। ये कहानियां निश्चय ही पाठक को आकर्षित करेंगी क्योंकि इनमें एक ऐसी अनजानी दुनिया का यथार्थ चित्रित है, जिसे बहुत कम लोग जानते हैं और यह यथार्थ आश्चर्यजनक, अमानवीयतापूर्ण तथा अविस्मरणीय भी है, जो कहानियों के माध्यम से समाज को चेतावनी देते हुए तीव्र आक्रोश व विद्रोह दर्ज कराता है।

इन कहानियों में निहित दर्दनाक सच्चाई हमें चकित भी करेगी और व्यवस्था के प्रति आक्रोशित भी। दलित कथाकारों और कहानियों के सन्दर्भ में हरिनारायण ठाकुर का कहना है कि–''यह सच है कि दलित कथाकारों में साहित्य की शास्त्रीय धारा के अनुरूप कहानीकला का अभाव है। किन्तु चेतना की सार्थक अभिव्यक्ति, संवेदनाओं की मार्मिकता और सामाजिक सरोकारों के संघर्षशील तेवर दलित कथाकारों की रचनाओं

में ही देखने को मिलते हैं। दलित कहानियों का मूल स्वर दलित जीवन के भोगे हुए यथार्थ के चित्रण द्वारा दलित जीवन की कथा–व्यथा, सामंती आतंक और मनुवादी व्यवस्था के विरूद्ध तीव्र आक्रोश और विरोध दर्ज कराना है।''[1]

उक्त कथन में उद्घाटित लेखक के विचार दलित कहानीकरों की कहानियों की विशेषता को प्रदर्शित करने में सहायक हैं। शास्त्रीय धारा के अनुरूप कहानीकला का अभाव कहानियों के यथार्थपरक होने का प्रमाण है, जो कि दलित समाज में बोली जा रही भाषा को जस–का–तस उकेर देता है। यह दलित पात्रों के जनजीवन को और अधिक नजदीकी तथा बारीकी से चित्रित करने में सहायक सिद्ध हुआ है। परिपक्व भाषा के अभाव में भी दलित जनजीवन पर आधारित कहानियों के ये पात्र पाठक को बेहद गहरे तक प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। इनके संवाद पात्रानुकूल तथा परिवेशानुकूल होते हैं। इसीलिए दलित कहानीकारों के पात्र सामान्य जीवन से जुड़े होने के उपरान्त भी हमें चौंकाते हैं, चाहे वह ओम प्रकाश वाल्मीकि 'यह अन्त नहीं' कहानी की बिरमा हो, 'मैं ब्राहम्ण नहीं हूँ' की सुनीता हो, 'मुम्बई कांड' का सुमेर हो, 'जंगल की रानी' की कमली हो, 'सलाम' का हरीश हो, 'गोहत्या' का सुक्का हो 'ग्रहण' तथा 'बिरम की बहू' का रमेसर हो 'अम्मा' की मैला उठाने वाली अम्मा हो तथा सूरज पाल चौहान की 'घाटे का सौदा' के डोरी लाल से बने डी0लाल हों, 'साजिश' की शान्ता हो, 'अंगूरी' की साहसी अंगूरी हो तथा मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'हमारा जवाब' का हिम्मत सिंह हो, 'गांव का सुक्खन हो, 'मजूरी' की सुमति हो तथा दयानन्द बटोही की 'भूल' नामक कहानी का बुद्धू हो तथा विपिन बिहारी की 'प्रतिकार' की गेंदवा हो, 'काँच' के बसन्त बाबू हों, अथवा 'पुनर्वास' का वैरागी हो तथा श्यौराज सिंह बेचैन की 'शोध प्रबन्ध' की रीना हो। उक्त वर्णित इन सभी कहानियों तथा इनके अतिरिक्त रचित दलित जनजीवन पर आधारित कहानियों में दलित कहानीकारों ने समाज, धर्म, अर्थ, परम्पराओं, जातिवाद, नैतिकता तथा छुआछूत और भेदभाव के नाम पर हो रहे दलित शोषण के विरूद्ध निर्णायक प्रहार, किया है। दलितों में भी दलित समझी जाने वाली नारी की यथा–कथा भी इन कहानियों में मुखर हुई दलित साहित्यकारों के मन्तव्य से स्पष्ट है कि वे सामाजिक विषमता से त्रस्त हैं। वे भी समाज के अन्य वर्गो की भांति आत्मसम्मान से युक्त जीवन जीने के लिए कृतसंकल्प हैं। दलित साहित्यकार डॉ0 कंवल भारती 'तब तुम्हारी निष्ठा क्या होगी' पुस्तक में कहते हैं, ''दलितों को गरीबी नहीं, सामाजिक बेइज्जती अखरती है।''[2] .....दलित साहत्यिकार अपनी अस्मिता की पहचान कर रहा है।

अतः हिन्दी की दलित कहानियां समाज परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं तथा सार्थक प्रभाव छोड़ रही हैं। कमलेश्वर के अनुसार, ''दलित साहित्य की कहानियां हमारे मानस संसार को बदल रही हैं और जड़ संस्कृति तथा न्याय–अन्याय की परिभाषा बदल रही हैं। रमणिका गुप्ता के शब्दों में कहें तो ये बौखलाए हुए आदमी की कहानियॉ नहीं हैं, उन सताए हुए समाज की कहानियां है, जो मनुष्यता का दावा करना सीख गया है और बराबरी का हक मांग रहा है।.....उसके लिए धर्म, भगवान, भाग्य, परम्पराएं, रूठियां, अंधविश्वास सब निरर्थक हैं। वह इन सबके विरूद्ध खड़ी हो गई।''[3]

निष्कर्षतः दलित कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से दलित जनजीवन के विराट अनुभवों के साथ उसकी अंतरंग दुनिया की अनछुई व अदृश्य परतों को खोलने में समर्थ सिद्ध हुए हैं। और अपने कथ्य की भंगिमा से दलित जनजीवन की समस्याओं के प्रति तीखे तेवर के साथ समकालीन हिन्दी साहित्य में एक सशक्त रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं।

रचनाकाल और प्रकाशनकाल

हिन्दी दलित साहित्य का उभार की दृष्टि से 1980 ई0 के बाद का समय अधिक महत्वपूर्ण है। अस्सी के दशक से दलितों की सामाजिक, राजनैतिक स्थिति में एक विशेष परिवर्तन आया है। मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, श्यौराज सिंह बेचैन आदि इस समय के चर्चित कहानीकार है; जिन्होने दलितों की समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया। यह बीसवीं सदी का अन्तिम दशक का, इस काल में दलितोत्थान का कार्य बड़े जोरों पर शुरू हुआ था। आजादी के पश्चात भी दलित स्वतंत्रता से वंचित ही रहे और उन्हें लगातार शोषण की मार झेलनी पड़ी। यहाँ तक कि इन्हें अपना मनपसन्द व्यवसाय करने, अच्छा रहन–सहन होना या अच्छी वेशभूषा पहनने पर भी पाबन्दी थी। इसी शोषण के अनवरत् क्रम ने सन् अस्सी के आस–पास दलित अस्तित्व और अस्मिता की मांग व विचार को जन्म दिया। दलित मुक्ति आन्दोलन दलित को एक मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित करने का पक्षधर है। परन्तु यह मुक्ति सकारात्मक होनी चाहिए, परिवार तथा समाज ऐसा बने जहां सवर्ण अवर्ण का वर्चस्व समान हो। दलित मुक्ति की आज सर्वाधिक आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रों में है, क्योंकि ग्रामीण दलित अशिक्षित होने के कारण आज भी पददलित है। ग्रामीण क्षेत्रों में दलित के अज्ञान ने उसकी प्रगति के सभी मार्ग अवरूद्ध कर दिए हैं। वह आज भी धार्मिक आडम्बरों और अंधविश्वासों में फंसा पुरानी रूढ़ियों को ही ढो रहा है। सामाजिक रूप से आज भी सवर्ण व दलित की स्थिति में अन्तर मिट नहीं सका है। स्वतंत्रता के बाद भी सवर्णो द्वारा जातिगत भेदभाव, छुआछूत, अपमान, शोषण, तिरस्कार तथा अपने से हीन एवं निम्न समझना आदि कुरीतियों में दबा हुआ दलित दिखाई दे रहा है। यद्यपि आर्थिक दृष्टि से वह अब आत्मनिर्भर अवश्य होने लगा है, किन्तु प्रत्येक क्षेत्र में अभी स्वाधीन नहीं हो सका है।

समकालीन जीवन की ज्वलंत समस्याओं को उद्घाटन प्रत्येक साहित्यकार का लक्ष्य रहता है। दलित कहानीकारों के भीतर के रचनाकार ने भी इसी लक्ष्य का संधान किया है। दलित कहानीकारों की कहानियां उन समस्याओं से लोगों को परिचित ही नही कराती अपितु उन समस्याओं के भीतर पहुंचकर उन्हें पहचानने और समझने को प्रयास करने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

21वीं सदी में प्रवेश करने पर भी भारतीय समाज में व्याप्त वर्ण–व्यवस्था से उपजी दलित जनजीवन की समस्याएं ग्रामीण क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक जटिल हैं। ग्रामीण दलित का जीवन कितना कठिन है, इसका अनुभव दलित कहानीकारों को भली–भांति है क्योंकि वे ग्रामीण पृष्ठभूमि से भी जुड़े हैं और उनकी कहानियां उनके जीवन के भोगे हुए यथार्थ पर आधारित हैं। इसका सहज अनुमान दलित कहानीकारों की कहानियों में वर्णित दलित पात्रों के जनजीवन से लगाया जा सकता है। इस सम्बन्ध में प्रो0 मैनेजर पाण्डेय ने ज्योतिबा फुले को उद्धृत करते हुए कहा था– ''गुलामी की यातना जो सहता है वही जानता है, और जो जानता है वही पूरा सच कह सकता है। सचमुच राख ही जानती है जलने का अनुभव कोई और नहीं।'' [4]

एक रचनाकार को अपने युग तथा परिवेश की समस्याएं और विसंगतियां अवश्य ही उद्वेलित करती हैं। रचनाकार उन समस्याओं और विसंगतियों के विरूद्ध अपनी सर्जना के माध्यम सं संघर्ष करता हुआ अपने सृजन कर्म की सार्थकता को प्रमाणित करता है। अपने अतीत के माध्यम से वर्तमान जीवन की संवेदना को व्यक्त करना एक रचनाकार के लिए गहन रचनात्मक चुनौती का कार्य होता है।

दलित कहानीकारों ने भी अपने अतीत के (भोगे हुए यथार्थ) स्मृति चित्रों की सहायता से अपनी कहानियों में वर्तमान जीवन की संवेदना व समस्याओं को भी व्यक्त किया है। दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में दलित जाति के पात्रों को ही सर्वोपरि लक्ष्य के रूप में उसके समस्त पहलुओं, भावों–विचारों, उत्कर्षो–अपकर्षो को चित्रित किया है।

ओम प्रकाश वाल्मीकि का कहानी–संग्रह 'घुसपैठिए' 2003 में प्रकाशित हुआ है। इसमें घुसपैठियें, यह अन्त नहीं, मुम्बई कांड, शवयात्रा, प्रमोशन, कूड़ाघर, मैं ब्राम्हण नहीं हूँ।, दिनेशपाल जाटव उर्फ दिग्दर्शन, रिहाई ब्रह्मास्त्र, हत्यारे तथा जंगल की रानी नामक बारह कहानियां संग्रहीत हैं। दलित जनजीवन पर आधारित इन कहानियों के सम्बन्ध में भूमिका में स्वयं ओमप्रकाश वाल्मीकि का मत है। कि–

''इन कहानियों की अन्तर्वस्तु मेरे अनुभवजगत की त्रासदियों ओर दुःखों से उपजी सामाजिक संवेदनाएं हैं। जिन्हें शब्द–दर–शब्द गहरे अवसादों के साथ यन्त्रणा से गुजरते हुए लिखा है।'' [5]

ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'सलाम' नामक कहानी संग्रह का पहला पुस्तकालय संस्करण राधाकृष्ण प्रकाशक प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 2000 में प्रकाशित हुआ परन्तु राधाकृष्ण पेपरबैक्स में पहला संस्करण सन् 2004 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कुल चौदह कहानियां संकलित हैं, जिनमें सलाम, सपना, बैल की खाल, भय, कहां जाए सतीश?, गोहत्या, ग्रहण, बिरम की बहू, पच्चीस चौका डेढ़ सौ, अंधड़, जिनावर, कुचक्र, अम्मा तथा खानाबदोश हैं। ये कहानियां सवर्ण समाज द्वारा सताए गए दलित समाज की समस्याओं को प्रकट करते हुए व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश दर्ज कराती हैं।

'हाशिए से बाहर' सन् 2010 में प्रकाशित हुआ। यह डॉ0 रजतरानी 'मीनू' द्वारा सम्पादित कहानी संकलन है। इसमें सोलह दलित कहानीकारों द्वारा रचित बाईस कहानियां संकलित हैं। ये कहानियां दलित जनजीवन के तमाम मुद्दों का स्पर्श करते हुए दलित स्त्री की स्थिति को भी स्पष्ट करती हैं।

डॉ0 दयानन्द बटोही द्वारा रचित 'सुरंग' नामक कहानी संग्रह 2009 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में आठ कहानियां संकलित हैं। इन कहानियों में– सुबह के पहले, सुरगं, शहर, अन्धेरे के बीचोबीच, अन्हेरवा में, मुर्दा गाड़ी, तिकोनी हंसी तथा भूल हैं। ये कहानियाँ दलितों के त्रासदपूर्ण जीवन को अभिव्यक्त करते हुए आर्थिक विपन्नता और अकाल से जूझते पात्रों, का भी चित्रण करती है, साथ ही जातिगत, विषमता शिक्षा के क्षेत्र में भेदभाव व स्त्री की सुरक्षा पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती हैं।

सूरजपाल चौहान के कहानी संग्रह 'हैरी कब आएगा?' का प्रथम संस्करण 1999 तथा द्वितीय संस्करण 2003 में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल चौदह कहानियां संकलित हैं। जिनमें परिवर्तन की बात, टिल्लू का पोता, छूत कर दिया, घाटे का सौदा, साजिश, अंगूरी, पांचवी कन्या, घमण्ड जाति का, चेता का उपकार, जलन, प्राण–प्रतिष्ठा, हैरी कब आएगा? अपना–अपना धर्म व सासू की मानसिकता नामक कहानियां हैं। इन कहानियों के सन्दर्भ में जयप्रकाश कर्दम का मत है–

'इस संग्रह की कहानियां उन लागों की यातना संघर्ष और जिजीविषा की कहानियां हैं, जो सवर्ण सामन्तों द्वारा बार–बार और विभिन्न प्रकार से उत्पीड़ित, उपेक्षित किए जाने के बावजूद अमानवीयता और अन्याय के समक्ष झुकते नहीं निरन्तर संघर्ष करते रहते हैं। वे आगे कहते हैं, 'ये कहानियां जहां एक ओर दलित की दीनता, दारूण्य और दमन की गाथा हैं, वहीं उनमें उपजते स्वाभिमान और संघर्ष–चेतना की भी संवाहक हैं।'' [6]

डॉ0 एन0सिंह द्वारा सम्पादित कहानी संग्रह 'यातना की परछाइयां, सन् 1998 में प्रकाशित हुआ। इसमें नौ दलित कहानीकारों की नौ कहानियां संग्रहीत हैं। ये कहानियां दलित जनजीवन की विषमताओं

को बड़ी ही बारीकी से उकेरती हैं। दलितों के साथ हो रहे भेदभाव पूर्ण व्यवहार और प्रतिकूल सामाजिक परिवेश के बाद भी आज दलित अपनी अस्मिता के प्रति सजग हो रहे हैं, और इसी क्रम में शिक्षा तथा नौकरी के प्रति आकर्षित भी हो रहे हैं। दलित जनजीवन को यथार्थता से प्रस्तुत करना ही इन कहानियों का प्रतिपाद्य है।

विपिन बिहारी द्वारा रचित कहानी–संकलन 'पुनर्वास' है। यह सन् 2006 में प्रकाशित हुआ। इसमें सात कहानियां सम्मिलित हैं–सीमाएं, कीर्तन मण्डली, प्रतिकार, आमने–सामने, कांच, समय चेत व पुनर्वास। ये कहानियां न केवल दलित पात्रों के स्वाभिमान को प्रदर्शित करने में सहायक हैं अपितु ये दलित स्त्री के साहस को भी स्पष्ट करती हैं। साथ ही अपनी जाति में रहकर ही उसे उन्नत बनाने पर भी बल देती हैं, क्योंकि किसी समस्या से डर कर भागना समस्या का समाधन नहीं होता। अंगद किशोर विपिन बिहारी की कहानियों के सन्दर्भ में कहते हैं–

''.....उनकी कहानियां शोषण, दमन, अत्याचार, रूढियों, अंधविश्वास तथा सामाजिक विषमताओं एवं विद्रूपताओं के खिलाफ एक मुहिम है। खोखले आदर्शवाद और उपभोक्तावादी अपसंस्कृति से परे मानवीय मूल्यों को प्रस्थापित करने के लिए बेचैन हैं उनकी कहानियां।''[7]

'हमारा जवाब' मोहनदास नैमिशराय द्वारा विरचित कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 2005 में हुआ। इस संग्रह में उन्नीस कहानियाँ संग्रहीत हैं। जिनके नाम हैं– कर्ज, जगीरा, गाँव, हमारा जवाब, परम्परा, तुलसा, आधा सेर घी, सुनो बरखुरदार, सपने, सिकन्दर, सफर, खबर, सिमटा हुआ आदमी, मजूरी, मुक्ति का संघर्ष, दर्द, एक गुमनाम मौत, गर्वनर के कोट का बटन, और एक अखबार की मौत। ये कहानियां भी दलित उत्पीड़न, शोषण, दमन आदि की क्रूर दास्तान बयां करती हैं। कहीं–कहीं सवर्णो के प्रति आक्रोश भी इन कहानियों में प्रकट हुआ है।

इसके अतिरिक्ति पाल चौहान द्वारा सम्पादित कहानी संग्रह 'हिन्दी के दलित कथाकारों की पहली कहानी, है। यह सन् 2004 में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल बाइस कानीकारों की पहली कहानी ही प्रकाशित हुई हैं। जिनमें मोहनदास नैमिशराय–'कुर्ज' ओमप्रकाश बाल्मीकि–जंगल की रानी' सत्सप्रकाश–'चन्द्रमौलि का रक्तबीज' सूरजपाल चौहान–'घाटे का सौदा', डॉ0 दयानन्द बटोही–'सुरंग' आदि कहानियां सम्मिलित की गई हैं। इन दलित कहानियों के सम्बन्ध में पुस्तक के प्रारम्भ में ही सूरजपाल चौहान कहते हैं–

'.....दलित चेतना की सार्थक अभिव्यक्ति दलित कथाकारों की ही कहानियों में देखी जा सकती है। सैकड़ों वर्षों बाद अब मूक क्रन्दन को दलित साहित्य के माध्यम से वाणी मिल रही है। हिन्दी का दलित साहित्य एक जलते हुए दीपक के समान है। जिसकी रोशनी में राह से भटका हुआ पाठक सोच–समझकर गन्तव्य की ओर चल पड़ता है। इस संग्रह की सभी कहानियों में मनुवादी–व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह, आक्रोश, दलित व्यथा, भोगे हुए यथार्थ, सामन्ती आतंक और अत्याचार का विरोध मुखर है।'[8]

निष्कर्षतः आज की सदी में दलित कहानीकार जिस अभिनव रूप और कटु यथार्थ के साथ हमारे समक्ष आते हैं, वह हैं परिवर्तन की चाह रखने वाले दलित कहानीकार, जो स्थापित और प्रचलित कथा–क्षेत्र और मूल्य कोष से भिन्न अनुभव क्षेत्र और मूल्य–चिन्तन को लेकर आ रहे हैं। उनके इस भोगे हुए यथार्थ का उसी रूप में चित्रण सभ्य समाज के समक्ष प्रश्नचिन्ह छोड़ता

है। दलित चिंतन की यह नई प्रक्रिया हमें दलित कहानीकारों की दलित जनजीवन पर आधारित समस्त कहानियों में दिखाई देती है। सवर्ण लेखकों व सवण्र समाज द्वारा भी इस ओर आकर्षित होना यह किसद्व करता है कि दलित कहानीकारों की ये कहानियां हृदय को उद्वेलित कर क्रान्ति धर्मी रचनाओं के रूप में स्थापित हो रही हैं।

रचना शिल्प के आधार पर

साहित्य में शैली की महत्ता की एक अखण्ड प्राचीन परम्परा है। संस्कृत विद्वानो ने शैली को रीति कहा है। आधुनिक काल में इसे शैली अंग्रेजी स्टाइल का पर्याय मान लिया गया है । विशिष्ट प्रयोंगो की भिन्नता के कारण प्रत्येक रचना दूसरी से अलग द्रष्टिगत होती है । और साहित्य में इसी पद्धति को भाषा शैली मान लिया गया है। लक्षणा एवं व्यंजना के प्रयोगों के द्वारा औचित्य का निर्वाह करने के कारण शैली को गरिमा प्राप्त होती है। प्रत्येक साहित्यकार की भाँति दलित साहित्यकार भाषा शैली के परंपरागत मानदंडों को नहीं मानता, बल्कि वह उनका निषेध करता है। परन्तु जब दलित कहानीकार अपनी कहानियों में अपने जीवन के यथार्थनुभवों का परिवेशात्मक भाषा में प्रस्फुटिकरण करता है, तब शैली खुद ब खुद उसके साथ जुड़ जाती है। डा0 अजय तिवारी का कहना है– 'कोई साहित्य अपने शिल्प से महान नहीं होता, अपने अनुभव से महान होता है और महान अनुभव अपने लिये नये शिल्प तलाश लेता है ।' [9]

वस्तुतः दलित कहानीकारों की कहानी में शिल्प कोई ओढ़ी हुई वस्तु नहीं अपितु वह उसकी सहगामिनी है। कहानी के रचना शिल्प का सम्बन्ध कहानी की रचना –शैली और कहानी की भाषा शैली से होता है जहां तक कहानी की रचना शैली का सम्बन्ध है, कहानियों के लिये विविध शैलियां प्रचलित हैं।.....साथ ही कतिपय कहानियों की रचना मिश्रित शैली में भी होती है जिनमें एक से अधिक शैलियों का सम्मिश्रण किया जाता है। [10]

1. *वर्णनात्मक शैली*

कथा साहित्य की पद्धतियों में परम्परागत व सबसे अधिक प्रचलित वर्णनात्मक शैली ही है। विश्व की अधिकतर भाषाओं में अनेक उपन्यास इस शैली में लिखे गये हैं। इस शैली की विधाओं की की कथावस्तु पात्र तथा स्थितियों का वर्णन साहित्यकार तृतीय पुरूष के रूप में करता है। भूत, वर्तमान, भविष्य से सम्बन्धित घटनाओं तथा वैचारिक दृष्टिकोण आदि बातों का यथासम्भव वर्णन एवं विवेचन वर्णनात्मक शैली द्वारा ही सम्भव हो पाता है। इस शैली में वर्णन की पद्धति सीधी भी हो सकती है और विवरणात्मक भी। वर्णन की यही पद्धति सीधी भी हो सकती है और विवरणात्मक भी। वर्णन की यही पद्धति कहीं विश्लेषणात्मक तो कहीं सांकेतिक भी हो जाती है।

ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सपना' इसी शैली में लिखी कहानी है यथा – 'जैसे जैसे मन्दिर निर्माण पूर्णता की ओर बढ़ रहा था नटराजन की धार्मिक गतिविधियां बढ़ने लगी थीं। माथे पर चन्दन का टीका और अधिक चौड़ा और लम्बा हो गया था। दफ्तर में उसने अपनी कुर्सी के पीछे दीवार पर शीशे में मढ़ा बालाजी का चित्र टाँग लिया था, दफ्तर का आरंभिक एक घंटा, नटराजन बगीचे से फूल तोड़ने, पूजा करने में लगाने लगा था। [11]'भय' कहानी का अंश उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है– 'कालू का घर बस्ती में घुसते ही दाईं ओर पडता था। औरों की तुलना में कालू ने कुछ ज्यादा ही जगह घेर रखी थी। आंगन में एक सुअर बाड़ा भी बना लिया था। जमीन में एक कुंड बनी हुई थी। जिसमें आठ दस सुअर एक दूसरे को धकियाते हुए चप्प चप्प की आवाज के साथ खाने पर टूट पड़ रहे थे। एक छोटा बच्चा मोटे तगड़े सुअर के नीचे से

कुंड तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था। मोटे सुअर ने अपनी थूथनी से उसे मारकर भगा दिया। चीं....चीं...चीं करता हुआ कालू के इर्द गिर्द घूमने लगा मोटे सुअर की हरकत पर कालू को गुस्सा ओ गया उसने बांस का डण्डा तड़ से मोटे सुअर की पीठ पर जड़ दिया और एक भददी सी गाली दी।' [12] उक्त कहानी का उदाहरण दलित जनजीवन को बहुत नजदीक से स्पष्ट करने में सहायक है।

वाल्मीकि जी की कहानी 'मैं ब्राह्मण नहीं हूँ' से भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग दृष्टव्य है– '.....मोहनलाल शर्मा के मकान से सटा हुआ मकान गुलजारी लाल शर्मा का था। उनकी ही लड़की से मोहनलाल शर्मा के बेटे की शादी हो रही थी। गुलाटी की सहानुभूति गुलजारी के साथ हो गयी थी। उसे लग रहा था जैसे मोहनलाल ने जाति छुपाकर घोर अपराध किया है और गुलजारी लाल शर्मा को धोखा दिया है। ऐसा धोखा जो सहन नहीं किया जा सकता है।'[13]

दलित कहानीकार मोहनदास नैमिशराय ने अधिकतर वर्णनात्मक शैली का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। 'कर्ज' नामक कहानी का अंश प्रस्तुत है– 'विधवा जीवन का आगमन रामप्यारी के के चालीसवें वर्ष में इसी काली रात से हुआ। गर्दिश की आँधी के कारण भविष्य की आशाओं का पटाक्षेप हो गया मिट्टी तथा गोबर की गंध मे रची बसी चूड़ियां उसने तोड़ डाली। जब पति ही नहीं रहा तो इन रंगीन चूड़ियों का क्या मोल ..... ? उनकी रंगीनता में दमक तो पुरूष के जीते–जी ही रहती है। चूड़ियों का चमकना या खनकना पुरूष के साथ ही होता है। ' [14]

नैमिशराय कृत 'एक अखबार की मौत' नामक कहानी से वर्णनात्मक शैली का अन्य उदाहरण प्रस्तुत है– 'अनगिनत गांवो की लाशों पर अपनी तमाम खूबसूरती और मनमोहक छटाओं के साथ पसरा हुआ शहर जहां कुछ अखबारी कारखानों का जमघट था। उन्हीं के बीच प्रजातंत्र अखबार की बुलन्द इमारत भी थी। जैसा अखबार वैसी ही इमारत। हाल में कुछ कलमकार और अखबारनवीस जमा थे। पिछले दो माह से प्रजातंत्र दैनिक सम्पादक विहीन अखबार था। जिसकी तलाश बड़े जोर शोर से जारी थी। यह बात अखबारी दुनिया में सब जानते थे। अखबार कर्मी उसी बहस में शरीक थे।' [15] वर्णनात्मक शैली में लिखित विपिन बिहारी की कहानी 'आमने सामने' का एक उदाहरण दृष्टब्य है– 'कमला को जैसे पूर्वाभास हो गया था उस पर हमला जल्दी ही होगा और वह काफी सतर्क हो गया था। सांझ का समय था। बाजार से लौट रहा था। उसके साथ तीन थे। अचानक हमला हुआ था उस पर। लाठियां चलायीं गयीं थीं। लेकिन वह साफ बच गया था। लेकिन तीन को कुछ चोटें लग गई थीं। आमने सामने की लड़ाई में वह पार नहीं पाता क्योंकि हमलावर कई थे। व्यर्थ जूझना फायदेमन्द नहीं लगा तो अपनी हिफाजत का सरंजाम एक कट्टा अपनी कमर से निकालकर आसमानी फायर झोंक दिया था। '..... [16]

इसके अतिरिक्त ओम प्रकाश वाल्मीकि की 'अम्मा','घुसपैठिये', 'प्रमोशन', नैमिषराय की 'गवर्नर के कोट का बटन', श्यौराज सिंह बेचैन की 'शोध प्रबन्ध', 'चन्द्रभान प्रसाद की 'चमरिया मइया का श्राप', रजतरानी मीनू की 'वह एक रात', भीमसेन सन्तोष की समता और ममता, डा0 उमेश कुमार सिंह 'पहली रात का अन्त' आदि कहानियों में भी वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं।'

2. *पूर्वदीप्ति शैली*

पूर्वदीप्ति या फ्लैश बैक शैली कहानी लेखन की एक महत्वपूर्ण शैली है। इसके अन्तर्गत घटनाओं तथा प्रसंगो को तत्काल न दिखाकर कहानी के किसी विशिष्ट पात्र की स्मृतियों में लौटाकर दिखाया जाता है। पूर्वदीप्ति शैली के माध्यम से

किसी एक घटना या प्रसंग पर पात्र के दोहरे और द्वन्द्वात्मक मनोभावों का प्रभाव दिखाने में सरलता होती है। यह शैली कथा साहित्य में दो प्रकार से प्रयुक्त होती है। पहले प्रकार में कथानक के प्रारम्भ अथवा अन्त में किसी विशिष्ट पात्र की स्मृतियां जाग्रत होती हैं और वह कुछ समय के लिए अपने अतीत की स्मृतियों में खो जाता है। दूसरे प्रकार में, कथानक के प्रारम्भ में इसे पूर्ण रूप से उपस्थित किया जाता है और अन्त में मूलकथा के विकसित होने के बाद उसे प्रारम्भिक बिन्दु से सम्बद्ध कर दिया जाता है।

अन्य शैलियों के साथ इस पूर्वदीप्ति शैली को भी अपनाकर लिखे गये कथा साहित्य में प्रभावात्मकता, सरसता तथा तर्कशुद्धता भी दृष्टिगत होती है। इस शैली द्वारा कथानक में वर्णित वर्तमान को अतीत की गहरी परतों में ले जाकर उसे जीवन के महत्वपूर्ण सन्दर्भो से सम्बद्ध किया जा सकता है। इस शैली द्वारा रचनाकार अपने विशिष्ट दृष्टिकोण तथा उद्देश्य की पूर्ति करते हुए कथानक और शिल्प में आकर्षण लाने में समर्थ होता है। दलित कहानीकारों ने इस शैली को अपनी कहानियों में प्रयुक्त किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'घुसपैठिये' से इस शैली का उदाहरण दृष्टव्य है– 'सुभाष सोनकर का उदास चेहरा राकेश की आंखो के सामने बार–बार आ रहा था। उसे लगा फोन उसकी पकड़ से फिसल रहा है। उसकी स्मृति में वह दिन दस्तक देने लगा था, जब रमेश चौधरी सुभाष सोनकर और उसके मित्रों को लेकर आया था।' [17]इसके अतिरिक्त वाल्मीकि जी की कहानियों– 'कहां जाए सतीश' ?, 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ', 'अंधड़', 'कुचक्र', 'यह अन्त नहीं', तथा 'जंगल की रानी' में भी पूर्वदीप्ति शैली के सुन्दर चित्रण मिलते हैं।

विपिन बिहारी की कहानी 'पुनर्वास' में भी पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है– 'वैरागी कभी नहीं भूल पायेगा जब टोले के झोपड़े जलाये गये थे। किसी में विरोध करने की ताकत नहीं थी। सवाल भी खड़ा नहीं किया गया था।.....झोपड़े क्यों जला रहे हो, हमारी गलती क्या है ? आंधी की तरह ही आये थे कुछ लोग। घातक हथियार थे उनके हाथों मे। सभी को भय हो गया था जान का।' [18] विपिन बिहारी की कहानी 'प्रतिकार', 'काँच' व 'समय चेत' आदि में भी इस शैली के दर्शन मिलते हैं।

पूर्वदीप्ति शैली में रचित सूरजपाल चौहान की कहानी 'घाटे का सौदा' का एक अंश दृष्टब्य है– डी0 लाल ड्राइंगरूम में चाय की चुस्की के साथ टी0 वी0 स्क्रीन पर चल रही अंग्रेजी फिल्म का आनंद ले रहे थे। फिल्म खत्म होते ही परदे पर एक सफाई मजदूर का रूखा और खुरदुरा चेहरा उभरा जो सड़क पर झुका, झाड़ू से सफाई कर रहा था। डी0 लाल को लगा जैसे पर्दे पर उभरा चेहरा उसके पिता कालू से मेल खा रहा है। वही नैन नक्श, वैसी ही मूछें, चेहरे पर वैसा ही तनाव। सब कुछ वैसा ही .....डी0 लाल की स्मृति पीछे लौटने लगी। [19] इसके अतिरिक्त चौहान जी की कहानी 'चेता का उपकार', 'जलन',तथा 'अपना अपना धर्म' भी इसी शैली में रचित कहानियां हैं। इसके अतिरिक्त अन्य दलित कहानीकारों की कहानियों में– नैमिषराय कृत 'जगीरा','परम्परा', 'आधा सेर घी' 'सपने' जयप्रकाश कर्दम कृत 'चमार' प्रेम कपड़िया की 'हरिजन', रत्नकुमार सांभरिया की 'क्षितिज' श्यौराज सिंह 'बेचैन' की 'शोध प्रबन्ध', चन्द्रभान प्रसाद कृत 'चमरिया मइया का श्राप', भीमसेन सन्तोष की 'समता और ममता' आदि पूर्वदीप्ति शैली में रचित दलित जनजीवन की कहानियां हैं।

3. *नाटकीय शैली*

इसमें नाटकों की तरह संवादो के माध्यम से कहानी का निर्माण होता है और ऐसी कहानी एकांकी का सा आनन्द देती है। इस दृष्टि से मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'तुलसा' उल्लेखनीय है। कहानी में सुमित के स्कूल में हुए

कार्यक्रम में हुए नाटक के माध्यम से तुलसा को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है। तुलसा के चरित्र पर अभिनीत नाटक की प्रस्तुति उसके चरित्र में बदलाव लाने का सकारात्मक कार्य करती है।

4. *ऐतिहासिक शैली*

इसे कथात्मक शैली भी कहते हैं। इसमें कहानीकार पात्रों के वर्णन, घटना के चित्रण और कहानी के समस्त तत्वों का निरूपण वर्णनात्मक शैली में करता है। मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'हमारा जवाब' में इस शैली के दर्शन होते हैं। यथा– 'चक्की पाट का आदमी था वह। उसी चक्की पाट का, जहां मुगल बादशाह ने आगरा में लाल किला बनवाने के लिए, चूना पीसने की चक्की बनवाई थी। लाल किले की सुर्खी में इन्हीं के पुरखों के खून की सुर्खी भी रही है। ऐसा उसने अपने बाबा से कई बार सुना था।'[20]

5. *संस्मरणात्मक शैली*

संस्मरणात्मक शैली में रचनाकार अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के जीवन के किसी पहलू पर अपनी स्मृति के आधार पर प्रकाश डालता है अथवा किसी घटना या प्रसिद्ध विषय के सम्बन्ध में अपने संस्मरणों को लिपिवद्ध करता है।

संस्मरणात्मक शैली में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने 'ब्राह्मास्त्र' नामक कहानी की रचना की है। इस कहानी में रविकुमार और ढौडियाल की बहस होती है रवि कुमार, ढौडियाल को एक सच्ची घटना के सम्बन्ध में बताता है जो समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव का पर्दाफाश करती है और दलित जनजीवन को स्पष्ट करती है।

6. *मनोविश्लेषणात्मक शैली*

मनोविश्लेषणात्मक शैली विश्लेषणात्मक शैली का ही एक रूप है। यह शैली आधुनिक युग के रचनाकारों की देन हैं। मनोवैज्ञानिक चरित्रों के सम्यक चित्रण के साथ–साथ मानव जीवन की जटिलताओं और मनुष्यों के मन की गहराइयों के निरूपण का आग्रह इस शैली में मिलता है। बौद्धिकता और तार्किकता इस शैली में समाविष्ट रहते हैं। ''बौद्धिकता की आड़ में दार्शनिक विचारों की प्रबलता इसमें मुख्यतः उपस्थित रहती हैं। इस शैली का एक विद्रोही रूप भी परिलक्षित होता है जिसके अन्तर्गत परम्परागत विचार प्रणाली, खोखली नारेबाजी, पंगु नैतिकता तथा मूल्यहीनता आदि के प्रति विरोधात्मक और विद्रोहात्मक भावना प्रखर रहती है।'' [21]

पाश्चात्य विद्वान फ्रायड के मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्तों के फलस्वरुप हिन्दी कथा साहित्य में मनोविश्लेषणात्मक शैली का अविर्भाव हुआ। इसके अन्तर्गत कथावस्तु को गौणता और चरित्रों की विविध मनःस्थितियों के सूक्ष्म चित्रांकन को प्रमुखता प्रदान की गयी है। दलित कहानीकारों की कहानियों में यह शैली प्रमुखता से देखने को मिलती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत कहानी 'भय' में भी मनोविश्लेषणात्मक पद्धति का सुन्दर प्रयोग हुआ है। कहानी के नायक दिनेश की मनोदशा का सफल मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कहानीकार ने किया है। दिनेश माई मदारन की पूजा के लिए सुअर के बाड़े से उसके बच्चे को निकालकर दूणने की प्रक्रिया और पॉश कॉलोनी में जाति छिपाकर रहना, मकान में ही सुअर के मांस को पकाकर पूजा करना साथ ही ब्राह्माण (पड़ोसी मित्र) के आ जाने और निम्न जाति का पता लगने की संभावित प्रताड़नाओं के भय से उत्पन्न उसकी मानसिक स्थिति का बड़ा ही सजीव मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। दिनेश की मनःस्थिति का चित्रण निम्न उदाहरण में प्रस्तुत है– ''वह सोने की चेष्टा करने लगा। अभी ठीक से झपकी भी नहीं आयी थी कि वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसे लगा मादा सुअर लाल–लाल आँखे और लंबे लंबे दाँत निकाले सामने खड़ी है। उसके पीछे तिवारी हाथ में लम्बा छुरा लिए दिनेश की ओर बढ़ रहा है। तिवारी की आँखो में

तिरस्कृत कर देने वाली घृणा भरी हुई थी। उसने भयभीत होकर बत्ती जला दी।'' [22] उक्त उद्धरण दिनेश की मानसिक स्थिति व अन्तर्मन का चित्रांकन बड़े स्वाभाविक रूप में करता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'मुम्बई काण्ड' भी मनोविश्लेषणात्मक पद्धति में रचित है। कहानी के नायक सुमेर के मन में उत्पन्न प्रतिशोध की भावना और अन्तर्द्वंद्व का मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण कहानीकार ने किया है। 'मैं ब्राह्माण नहीं हूँ' कहानी भी जातिगत हीनता बोध प्रगट करती है। 'अंधड़ कहानी' के नायक मि0 लाल का भी वाल्मीकि जी ने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। मि0 लाल के मस्तिष्क में बेटी के प्रश्नों से परेशान होने के चित्रण से वहाँ उनकी मनःस्थिति चित्रित होती है।

डा0 दयानन्द बटोही की कहानियों में भी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण देखने को मिलता है। बटोही जी की कहानियां 'सुरंग', 'तिकोनी', 'हंसी','अंधेरे के बीचोबीच' के पात्र उच्च शिक्षित हैं। पर बेरोजगारी के कारण आर्थिक समस्याओं से जूझते हैं। उनकी मनोदशा का चित्रण करते हुए कहानीकार ने सामाजिक, आर्थिक तथा व्सवसायगत समस्याओं को स्पष्ट किया है।

सूरजपाल चौहान की कहानी 'घाटे का सौदा' के नायक के मन में जाति को लेकर हीनताबोध की भावना को स्पष्ट करती है 'घमण्ड जाति का' सवर्णो के जाति में उच्च होने के अहम् को उद्घाटित करती है।

इस प्रकार दलित कहानीकारों की कहानियों में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। ऐसा उक्त वर्णन से स्पष्ट है।

7. *आत्मकथात्मक शैली*

आत्मकथात्मक शैली को आत्मचरित्र शैली भी कहते हैं। इसमें कहानीकार 'मैं' के माध्यम से कहानी कहता है। यह कहानी प्रायः उत्तम पुरूष में ही लिखी जाती है। दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में इस शैली का भी प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। दयानन्द बटोही ने इस शैली का प्रयोग अपनी 'सुरंग' व 'मुर्दागाड़ी' नामक कहानियों में किया है। 'सुरंग' कहानी का एक उदाहरण दृष्टब्य है–

'मैं पसीना में भीग जाता हूं। पैसे तो परसों ही समाप्त हो गये थे। घर में पिताजी भी बीमारी से लड़ रहे हैं।..... मैं पुनः सोचने लगता हूं आखिर अंधेरी सुरंग में हम लोग कब तक रहेंगे। हाथी और हाथी के सूड दोनो को सूई के छिद्र से निकालना चाहते थे। [23]

डा0 सुशीला टाकभौरे की कहानी 'कड़वा सच' भी आत्मकथात्मक शैली में विरचित हैं। यथा–'मैं मन ही मन अपने आन्तरिक बोध से बातें करने लगी। मेरा बोध कह रहा था–''लिखो, कुछ नया लिखो, अच्छा'' –मैंने पूछा –''कैसा नया, कैसा अच्छा?.....'' तब उसने कहा –''कुछ नया,कुछ अपोजिट....'' [24] अस्तु दलित कहानीकार अपनी कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का भी प्रयोग करने में पीछे नहीं हैं।

8. *प्रतीकात्मक शैली*

प्रतीकात्मक शैली द्वारा अदृश्य, अस्पर्श्य, (अमूर्त) की अभिव्यक्ति को सरल रूप में प्रतीको द्वारा व्यक्त किया जाता है। इस शैली द्वारा केवल मानव जीवन का ही प्रतिनिधित्व नहीं किया जाता है, अपितु निर्जीव सृष्टित्पदार्थो को भी प्रतीक रूप में ग्रहण किया जाता है। डा0 पद्मा अग्रवाल ने प्रतीक को अचेतन अवस्था की भाषा कहा है। [25] फ्रायड का कथन है कि, ''ठोस कामना' निश्चित इच्छा को व्यक्त करने वाली वस्तु प्रतीक है।''[26] डॉ0 नगेन्द्र ने प्रतीक के सम्बन्ध में अपना अभिमत दिया है प्रतीक एक प्रकार से रूढ़ उपमान का ही दूसरा नाम है, जब उपमान स्वतंत्र न रहकर पदार्थ विशेष के लिए रूढ़ हो जाता है, तो वह प्रतीक बन जाता है।'' [27] प्रतीकात्मक शैली की रचनाओं में सूक्ष्मता रहती है जिसे रचना के अनेक

धरातलों और स्तरों की गहन पड़ताल के बाद ही पकड़ा जा सकता है। कथा साहित्य में प्रतीकात्मकता दो रूपों में परिलक्षित होती है – (1) परम्परागत अथवा रूढ़ प्रतीकों द्वारा (2) वैयक्तिक अथवा स्वछन्द प्रतीकों द्वारा। ''रूढ़ प्रतीक लोकजीवन में प्रयुक्त होने वाले सामान्य प्रतीक होते हैं जिनका अर्थ सहज सम्भव है। वैयक्तिक प्रतीक रचनाकार किसी सन्दर्भ या विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त करता है। ये प्रतीक सहज बोधगम्य नहीं होते हैं। क्योकि इनका कोई पूर्व सांकेतिक आधार नहीं होता है। [28]

प्रो0 नित्यानंद तिवारी के शब्दों में–''प्रतीक प्रस्तुत वस्तु से अधिक और भिन्न किसी और बात का संकेत करता है।'' [29] दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग कर प्रतीकात्मक शैली में भी कहानियां लिखीं। कुछ कहानियों के शीर्षक ही प्रतीकात्मक हैं, जो कलात्मक सौन्दर्य को निखारने में सहायक हैं। उदाहरण के लिए ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'अंधड़' का नायक अपनी जाति छिपाकर रहता है, परन्तु गाँव जाने पर जब उसकी ही पुत्री उससे प्रश्न करती है कि उसने ऐसा क्यों किया, तब उन्हें पश्चाताप हुआ और उन्हें लगा कि वे जीवन में आई आंधी के प्रतीक अर्थात अंधड़ के बीच फंसे हैं। यथा– उन्होंने करवट बदली और सुबह होने की प्रतीक्षा करने लगे लेकिन स्मृति में उन्हें उठने वाले अंधड़ थमने का नाम नहीं ले रहे थे उन्हें लगा, जैसे वह अपनी पहचान भूल चुके हैं, जिसे ढूँढने की तमाम कोशिशें अंधड़ के बीच खो गई हैं।' [30]

'जिनावर' अत्याचारी प्रवृत्ति के व्यक्ति सवर्ण चौधरी का प्रतीक है जो पशु से भी बदतर है और बुरे कार्यो में संलिप्त है। यथा–'उसे खुद पर भी गुस्सा आ रहा था। उसने एक ऐसे आदमी के लिए अपनी जिन्दगी बर्बाद कर ली जो कि आदमी नहीं, जंगली जिनावर हो ..... न जाने कितनी बार उसने चौधरी के लिए अपनों पर लाठियां चलाई थीं । वह खुद भी तो जिनावर बन गया था।' [31] डॉ0 उमेश कुमार सिंह की कहानी 'पहली रात का अन्त' शीर्षक प्रतीकात्मक है। यह रात दुःखों, परेशानियों व अन्याय की प्रतीक है। उदाहरणतः ''माँ, क्या रात खत्म हो गई।'' तब तो दिन निकलने वाला होगा। खूब बड़ा लाल लाल सूरज होगा बेटा। चालीस बरस बाद आज पहली बार सूरज निकल रहा है। इतनी बड़ी रात तो ईश्वर ने कभी नहीं देखी होगी।'' [32]

उक्त कहानी में रात दुख का प्रतीक है और सूरज नई उमंगे, खुशहाली, परेशानी के अन्त और सुख का प्रतीक है। कहानी की प्रतीकात्मकता वास्तव में प्रशंसनीय है।

दयानन्द बटोही की कहानी 'सुरंग' दलितों के समक्ष खड़ी समस्याओं व परेशानियों की प्रतीक है। सी0 बी0 भारती की कहानी का शीर्षक 'स्टेटस' उच्चता का प्रतीक है। रामजी यादव की कहानी 'खेलने के दिन' के सवर्ण पात्र धन्नी चौधरी को हुंडार (भेड़िये) से भी अधिक शक्तिशाली (अर्थात बुरी प्रवृत्तियों में लिप्त कुदृष्टि वाले दलित स्त्रियों से अपनी मनमानी करने वाले होने के कारण) बताकर कहानी में प्रतीकात्मकता उत्पन्न कर दी है।

भाषा प्रयोगों के आधार पर

दलित कहानीकारों ने किसी एक भाषा को आधार बनाकर साहित्य सृजन किया हो ऐसा नहीं है। उन्होंने विभिन्न अंचलो की भाषा शैली का प्रयोग किया हैं क्योकि जो दलित रचनाकार जिस परिवंश से आया अपनी भाषा भी वह साथ लेकर आया। ओम प्रकाश वाल्मीकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश अर्थात मुजफ्फरनगर से सम्बद्ध हैं अतः कौरवी भाषा का प्रयोग उनकी कहानियों में देखने को मिलता है । रजतरानी 'मीनू'का सम्बन्ध शाहजहांपुर से होने के कारण उनकी कहानियों में

कन्नौजी भाषा के दर्शन होते हैं। मोहनदास नैमिषराय की रचनाओं में खड़ी बोली, विपिन बिहारी व दयानन्द बटोही की रचनाओं में बिहारी हिन्दी तथा इसके अतिरिक्त मुम्बइया हिन्दी और गुजराती भाषा के प्रयोग भी इन दलित कहानीकारों की कहानियों में देखने को मिलते हैं।

कथा साहित्य को गतिशीलता अर्थवत्ता तथा मूल्यवत्ता प्रदान करने के कार्य में भाषा अहम भूमिका निभाती है। उद्देश्य, कथ्य, वातावरण तथा विषय अनुसार भाषा का अपना एक स्तर होता है, जो रचनाकार की शैली के अनुरूप व्यक्त होता है। जीवन के गहन अनुभव संवेदना और बौद्धिकता से मुक्त कोरे भाषागत चमत्कार तथा विलक्षणता का आधुनिक युग में कोई महत्व नहीं है इसीलिए दलित कहानीकारों ने दलित जनजीवन को स्पष्ट करने के लिए पात्रानुकूलित भाषा का ही प्रयोग किया है। दलित कहानीकारों की कहानियों में दो प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया गया है–(1) मानक भाषा, (2) लोक भाषा ।

अतः दलित कहानीकारों ने मानक भाषा व लोक भाषा का प्रयोग बेहद सजगता से किया है, और पात्रानुकूलित भाषा का प्रयोग कर पात्रों को जीवन्त करते हुए दलित जनजीवन का यथार्थांकन किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'दलित साहित्य का समाजशास्त्र'–डॉ0 हरिनारायण ठाकुर–पृ0सं0–421, संस्करण–2009–प्रकाशक, भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड़, नई दिल्ली।
2. (डॉ0 तिलक सिंह)–'हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास'',पृ0सं0–188
3. प्रथम संस्करण–2003, प्रकाशक–राजेश प्रकाशन, जी–5/62, अर्जुन नगर, दिल्ली–110051
4. दूसरी दुनिया का यथार्थ, सं0–रमणिका गुप्ता भूमिका–कमलेश्वर,पृ0सं0–6
5. प्रो0 मैनेजर पाण्डेय–युद्धरत आम आदमी–जुलाई–सितम्बर 1995,दलित चेतना कविता विशेषांक 31,सं0 रमणिका गुप्ता
6. ओमप्रकाश वाल्मीकि–घुसपैठिए,भूमिका (अपप)
7. हैरी कब आएगा? पृ0सं0 8/9 (सूरजपाल चौहान)
8. विपिन बिहारी–(पुनर्वास)–अंगद किशोर पत्रकार कहानी संग्रह के फ्लैप से
9. हिन्दी के दलित कथाकारों की पहली कहानी–सं0 सूरजपाल चौहान, भूमिका–पृ0सं0–1 अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद,दिल्ली
10. कल के लिये, पत्रिका– डा0 अजय तिवारी का लेख,पृ0स0–22
11. हिन्दी के प्रतिनिधि कहानीकार डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना,पृ0सं0–24 (विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा)
12. सलाम ,पृ0सं0–26 ,ओम प्रकाश वाल्मीकि ,'सपना'।
13. सलाम ,पृ0 सं0 39 ,ओम प्रकाश वाल्मीकि, 'भय'।
14. ओमप्रकाश वाल्मीकि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ (घुसपैठिये) ,पृ0स0–61/62
15. हमारा जवाब ,पृ0स0–9 मोहनदास नैमिशराय–'कर्ज'
16. (हमारा जवाब) पृ0स0–170 मोहनदास नैमिशराय 'एक अखबार की मौत'
17. (पुनर्वास) पृ0स0–56 विपिन बिहारी (आमने सामने)

18. (घुसपैठिये) पृ0स0–13 ओमप्रकाश वाल्मीकि 'घुसपैठिये'
19. पुनर्वास –पृ0स0 97–विपिन बिहारी–'पुनर्वास'
20. (हैरी कब आयेगा) पृ0स0–32–सूरजपाल चौहान –'घाटे का सौदा'
21. (हमारा जवाब)– पृ0स0–48–मोहनदास नैमिशराय–'हमारा जवाब'
22. उपन्यास समीक्षा के नये प्रतिमान –डा0 दंगल झाल्टे,पृ0स0–36
23. (सलाम)पृ0स0–46–ओमप्रकाश वाल्मीकि–'भय'
24. (सुरंग) पृ0 स0 – 18 – दयानन्द, बटोही – 'सुरंग'
25. सुशीला टाकमौरे– कड़वा सच,पृ0स0–25
26. डा0 पद्मा अग्रवाल : ए साइकलोजिकल स्टडी इन सिबोलिज्म प्रीफेस,पृ0स0–26
27. डा0 पद्मा अग्रवाल : ए साइक्लोजिकल स्टडी इन सिबोलिज्मप्रीफेस,पृ0स0–26
28. डॉ0 पद्मा अग्रवाल (उपरोक्त)
29. डा0 ज्ञानवती अरोड़ा–: समसामयिक हिन्दी–कहानी में बदलते पारिवारिक सम्बन्ध 1989,पृ0स0–266
30. प्रो0 नित्यानन्द तिवारी– साहित्य का स्वरूप, राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,पृ0स0–70
31. सलाम–पृ0स0–93–ओमप्रकाश वाल्मीकि ,'अंधड़'
32. सलाम–पृ0स0–101–ओमप्रकाश वाल्मीकि –'जिनावर'
33. हाशिए से बाहर ,पृ0स0–228–'पहली रात का अन्त'–डा0 उमेश कुमार सिंह

Copyright © 2015, Dr. Bushra Rizwaan Jafri. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.